Sankatmochan Hanuman Ashtak

॥ हनुमानाष्टक ॥
बाल समय रवि भक्षी लियो तब,
तीनहुं लोक भयो अंधियारों |
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहु सों जात न टारो |
देवन आनि करी बिनती तब,
छाड़ी दियो रवि कष्ट निवारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो |
चौंकि महामुनि साप दियो तब,
चाहिए कौन बिचार बिचारो |
कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के सोक निवारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

अंगद के संग लेन गए सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो |
जीवत ना बचिहौ हम सो जु,
बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो |
हेरी थके तट सिन्धु सबै तब,
लाए सिया-सुधि प्राण उबारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

रावण त्रास दई सिय को सब,
राक्षसी सों कही सोक निवारो |
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाए महा रजनीचर मारो |
चाहत सीय असोक सों आगि सु,

दै प्रभुमुद्रिका सोक निवारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

बान लग्यो उर लछिमन के तब,
प्राण तजे सुत रावन मारो |
लै गृह बैद्य सुषेन समेत,
तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो |
आनि सजीवन हाथ दई तब,
लछिमन के तुम प्रान उबारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

रावन युद्ध अजान कियो तब,
नाग कि फाँस सबै सिर डारो |
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो |
आनि खगेस तबै हनुमान जु,
बंधन काटि सुत्रास निवारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

बंधु समेत जबै अहिरावन,
लै रघुनाथ पताल सिधारो |
देबिहिं पूजि भलि विधि सों बलि,
देउ सबै मिलि मन्त्र विचारो |
जाय सहाय भयो तब ही,
अहिरावन सैन्य समेत संहारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

काज किये बड़ देवन के तुम,
बीर महाप्रभु देखि बिचारो |
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जो तुमसे नहिं जात है टारो |
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो ||
को नहीं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ......

॥ दोहा ॥
लाल देह लाली लसे,

अरु धरि लाल लंगूर |
वज्र देह दानव दलन,
जय जय जय कपि सूर ||

|| इति संपूर्णंम् ||

Dharmik Mind

WebSite : - https://www.dharmikmind.com